यीशुः हमारा अनन्त उद्धारकर्त्ता

जब यीशु मसीह का उल्लेख आता है तो मेरा दिमाग झूमने लगता है और मैं अवाक सा रह जाता हूं। वह पृथ्वी से लम्बा और समुद्र से चौड़ा है, आकाश से ऊंचा और अधोलोक से गहरा है (देखिए अय्यूब 11:8, 9)। ढूंढ़ने पर भी मैं उसे न तो पा सकता हूं और न ही उसकी सीमाओं को जान सकता हूं (देखिए अय्यूब 11:7)।

फिर भी, अमापनीय मसीह को अर्थात (1) अनन्तकाल से सृष्टि तक, (2) सृष्टि से बैतलहम तक, (3) बैतलहम से पुनरुत्थान तक, (4) पुनरुत्थान से न्याय तक और, (5) न्याय के दिन से अनन्तकाल तक, पांच स्थानों पर आसानी से दिखाया जा सकता है:

अनन्तकाल से सृष्टि तक

इससे पहले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, पृथ्वी और जगत के सब रहने वाले पैदा हुए, अनन्तकाल से भी पहले, यीशु मसीह जीवित और सक्रिय तथा किसी भी दो धारी तलवार से तेज़ था (भजन संहिता 90:2; इब्रानियों 4:12)। ऐसा कुछ भी नहीं था जो उसकी आंखों के सामने न हो अर्थात उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और बे-परद थीं (इब्रानियों 4:13)। उसका निकलना प्राचीन काल से, वरन अनादिकाल से ही ठहराया हुआ था (मीका 5:2)। पृथ्वी पर थोड़े समय के अस्थाई प्रवास के दौरान, उसने पिता के साथ अपनी उस महिमा को स्मरण रखा जो जगत के पहले अर्थात उस समय थी जब वह धनी था (यूहन्ना 17:5; 2 कुरिन्थियों 8:9)। यीशु मसीह की आयु की कोई सीमा नहीं है अर्थात वह कल, आज और युगानुयुग एक जैसा ही है (इब्रानियों 13:8)। वह ''अनादि पिता'' है।[1]

यीशु मसीह प्रभु है।[2] इस सत्य के कारण, यह दावा करना कि वह सृष्टि का एक भाग है, कोई छोटी भूल नहीं है। ऐसे मसीह की ज्ञानवादी धारणा जिसे पिता के द्वारा एक युग (aeon) या ''ईश्वरीय निर्गम'' बनाया गया था, इस तथ्य के साथ कि यीशु प्रभु है, मेल नहीं खाती है। कुलुस्सियों 1:15 के अनुसार ''सारी सृष्टि में पहलौठा है,'' की व्याख्या यह अर्थ निकालने के लिए नहीं होनी चाहिए कि वह सब बनाई गई वस्तुओं में से प्रथम है। यदि ऐसा होता, तो इसका अर्थ यह होगा कि उसने अपने आपको बनाया, क्योंकि ''उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई'' और वह ''सब वस्तुओं में प्रथम है'' (कुलुस्सियों 1:16, 17)। इसलिए, कुलुस्सियों 1:15 में ''पहलौठा'' शब्द का अर्थ उसके मूल के लिए नहीं बल्कि

पद या स्थिति[3] के लिए प्रतीकात्मक रूप में लेना चाहिए। यीशु प्रधान, सम्पूर्ण अधिकार का स्वामी तथा सृष्टि की सब वस्तुओं से ऊपर है (देखिए भजन संहिता 89:27)। वरन, यीशु स्वयं ही एक वस्तु या जीव बन जाता है और यूहन्ना का यह कथन सत्य नहीं हो सकता था कि, ''सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई'' (यूहन्ना 1:3)।

एक धार्मिक गुट मसीह को एक अधीन ईश्वर अर्थात रचा गया देवता बताकर आध्यात्मिक ज्ञानवादियों के मार्ग पर चल रहा है।[4] वे कुलुस्सियों 1:18 में ''आदि'' शब्द का अर्थ गलत निकालकर कहते हैं कि मसीह का कोई आरम्भ था। परन्तु, संदर्भ से पता नहीं चलता कि मसीह का कोई आदि था, बल्कि वह तो सब वस्तुओं का आरम्भ करने वाला, प्रारम्भ कर्त्ता, उत्पन्न करने वाला, मुख्य स्रोत और सृष्टि का कारण था।[5]

यह धार्मिक गुट यीशु के अनादि स्वभाव को नकारकर प्रकाशितवाक्य 3:14 के ''मूल'' शब्द का भी गलत इस्तेमाल करता है। जो कोई यह कहता है कि यीशु परमेश्वर की सृष्टि का आरम्भकर्त्ता नहीं बल्कि उसकी पहली वस्तु थी, तो उसे यह भी कहना चाहिए कि परमेश्वर पिता का आरम्भ हुआ था, क्योंकि प्रकाशितवाक्य 21:6 में उसके लिए इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है।[6] फिर, यह दावा करने से कि यीशु का आरम्भ हुआ था न केवल पिता के आरम्भ की बात होगी, बल्कि संदर्भ के अनुसार दोनों का अन्त भी होना आवश्यक है।[7] जब कोई सही ढंग से पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा को अनन्त के रूप में देखता है तो बाइबल की सभी आयतें एक दूसरे से जुड़ी नज़र आती हैं।[8]

आदि में यदि यीशु केवल परमेश्वर के साथ ही नहीं, बल्कि परमेश्वर भी *था,* तो उसके अनादि होने की बात पर कोई विवाद नहीं होना चाहिए (यूहन्ना 1:1)। यीशु के एक ही समय में परमेश्वर के साथ और परमेश्वर होने की बात को स्पष्ट करना असम्भव है। गणित से तो नहीं परन्तु विश्वास से कहा जाता है कि एक तीन हैं, और तीन एक है (व्यवस्थाविवरण 6:4; इब्रानियों 1:8; प्रेरितों 5:3, 4)। ये तीनों ही एक परमेश्वर हैं जिनका स्वभाव तो एक है, परन्तु दिमाग अपना-अपना है (रोमियों 8:27; फिलिप्पियों 2:5)। परमेश्वर के त्रिएक होने की बात बाइबल को स्वीकार्य है परन्तु मानवीय दृष्टिकोण से इसे समझाना सम्भव नहीं है। अधिकार में यीशु तो अपने पिता के अधीन है (''पिता मुझ से बड़ा है''; यूहन्ना 14:28), परन्तु स्वभाव तथा अस्तित्व में वह अधीन नहीं है (''मैं और पिता एक हैं''; यूहन्ना 10:30). वास्तविक अर्थ में वह पिता के बराबर है और ''परमेश्वर'' और ''पराक्रमी परमेश्वर'' कहलाता है (फिलिप्पियों 2:6; यशायाह 9:6)।

यीशु पिता के अधीन है, इसलिए कई लोगों ने न केवल उसके अनादि होने का इन्कार किया है, बल्कि यह भी इन्कार किया है कि वह ''[परमेश्वर की] महिमा का प्रकाश'' है (इब्रानियों 1:3)। चौथी शताब्दी में सिकंदरिया के एरियुस ने यह दावा करते हुए कि यीशु परमेश्वर के जैसा (यू.: *homoi*) है इस तथ्य को मानने से इन्कार कर दिया था कि यीशु का अस्तित्व (यू.: *ousios*) पिता की तरह (यू.: *homo*) है। इसके फलस्वरूप, उसने यह दावा किया था कि यीशु अनादि नहीं है अर्थात वह सृष्टि का एक भाग है जो मनुष्य से

थोड़ा ऊपर परन्तु परमेश्वर से थोड़ा नीचे है। अथनसियुस ने इब्रानियों 1:3 में ''तत्व'' या ''वस्तु'' (यू.: *hupostasis*) पर ज़ोर देते व यह पुष्टि करते हुए कि यीशु केवल उसके जैसा नहीं (यू.: *homoiousios*) बल्कि वह परमेश्वर ही (यू.: *homoousios*) है, एरियुस का विरोध किया। इस प्रकार शब्द जोड़ में इतनी छोटी सी भिन्नता थी कि उसमें एक अक्षर ''i'' (आई) को जोड़ा या निकाला जा सकता था; परन्तु शिक्षा में यह भिन्नता सृष्टि तथा सृष्टिकर्त्ता अर्थात मनुष्यजाति और परमेश्वर के बीच की थी।

''परमेश्वर का पुत्र'' वाक्यांश का अध्ययन बड़ी सावधानी से होना चाहिए, क्योंकि यदि परमेश्वर ने वास्तव में पुत्र को जन्म दिया था, तो जन्म लेने वाला वह पुत्र अपने पिता से छोटा है, और अनादि नहीं है। मसीह जिसे जन्म दिया गया हो, अनादि मसीह नहीं हो सकता है। यह कठिनाई उसके ''सब युगों से पहिले जन्म लेने'' या उसके ''अनादि पीढ़ी'' होने की बात कहकर दूर नहीं हो जाती जिसका अर्थ अनादि अर्थात बिना आरम्भ तथा अन्त की निरन्तर प्रक्रिया हो। बाइबल के लेखकों को इस तर्कसंगत समस्या को सुलझाने की आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि उन्होंने यह नहीं लिखा कि यीशु को सृष्टि के पहले उसके अस्तित्व में जन्म दिया गया था।[९]

बाइबल के लेखकों ने यीशु के जन्म की बात उस समय की थी जब उसने बैतलहम में जन्म लिया था। स्पष्टत:, इस तथ्य के कारण, उसे ''परमेश्वर का पुत्र'' कहा गया था (लूका 1:35)। फिर, मुर्दों में से यीशु के जी उठने और स्वर्ग में महिमा पाने पर उसे जन्माने की बात कही गई थी (प्रेरितों 13:30-35; इब्रानियों 1:3-5; 5:5)। उसके बाद यीशु को भौतिक तथा प्रतीकात्मक रूप से ही उचित ''परमेश्वर का पुत्र'' कहा गया था; परन्तु सृष्टि से पूर्व उसे ऐसे नहीं बुलाया गया था। यदि सृष्टि से पहले पिता/पुत्र का कोई सम्बन्ध था, तो पुत्र की आयु पिता के बराबर नहीं हो सकती है। फिर यदि सृष्टि से पहले परिवार था, तो कोई हैरान हो सकता है कि यीशु की मां कौन थी और परिवार में पवित्र आत्मा का स्थान क्या था। यदि सृष्टि की रचना से पूर्व यीशु ''परमेश्वर का पुत्र'' नहीं था तो इन कठिन प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है।

यीशु को अब परमेश्वर का पुत्र कहा जाता है, इसलिए पापियों को चाहिए कि इस तथ्य को जानकर अपने पूरे मन से विश्वास करें (रोमियों 10:9, 10)। एक पापी को यह जानने की आवश्यकता नहीं है कि यीशु को वह नाम कब और किस अर्थ में मिला है। परन्तु, प्रत्येक पापी को यह जानकर परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए कि इस नाम से परमेश्वरत्व के बहुमूल्य तथा अर्थपूर्ण सम्बन्ध का पता चलता है। सब लोग पिता के उस प्रेम के लिए आनन्दित हो सकते हैं जो वह अपने प्रिय लोगों से करता है।

परमेश्वर के पुत्र का परमेश्वर से कम न होना बहुत से लोगों के लिए ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान है (रोमियों 9:33)। बहुत से यहूदी तथा उदारवादी लोग यह तो मान लेंगे कि ''वह एक भला आदमी है,'' परन्तु उसके परमेश्वर होने की बात से इन्कार करते हैं (यूहन्ना 7:12)।

बहुत से लोग (जैसे यहूदी, नास्तिक, आर्य और अन्य) यीशु को परमेश्वर से कम

बताते हैं, जबकि कई तो परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र में अन्तर करने से ही इन्कार करते हैं। व्यक्तिवादियों ने तीसरी शताब्दी में (यूहन्ना 10:30; 14:9 का दुरुपयोग करते हुए) दावा किया कि पुत्र ही परमेश्वर था। वे यीशु को ''सृष्टि का परमेश्वर तथा पिता'' कहते थे।[10] ''पेट्रीपसियन'' नामक एक समुदाय सिखाता था कि पिता दुख सहकर क्रूस पर मर गया था। इस शताब्दी के एक धार्मिक समुदाय ने अपने विश्वास में तीसरी शताब्दी के विचार का कुछ भाग लिया है कि परमेश्वरत्व में केवल एक ही व्यक्ति है। वे बहुत सी आयतों का दुरुपयोग करते हुए, इस बात पर दृढ़ हैं कि पुत्र किसी भी प्रकार से पिता से अलग नहीं है।[11]

सृष्टि से बैतलहम तक

''हम मनुष्य को ... बनाएं'' (उत्पत्ति 1:26) कथन से संकेत मिलता है कि सृष्टि की रचना में कम से कम एक ईश्वरीय सहायक अवश्य है। पुराने नियम के दूसरे पदों से बिल्कुल स्पष्ट है कि एक सहायक तो आत्मा ही था (उत्पत्ति 1:2; 33:4; भजन संहिता 104:30; अय्यूब 26:13 भी देखिए)। एक और सहायक, जिस पर सबसे अधिक ज़ोर दिया जाता है, यीशु था जिसे वचन के रूप में पहचाना जा सकता है।

> आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई (यूहन्ना 1:1-3; देखिए इब्रानियों 1:1-3)।

हज़ारों लोगों ने यूहन्ना के इस ऐलान कि जो देहधारी हुआ वह वचन, अर्थात *लोगोस* ही था, की विषय-वस्तु को समझने की कोशिश की है। एक आयत में जहां उसका परिचय परमेश्वर के रूप में करवाया जाता है वहीं उसे परमेश्वर से अलग भी दिखाया जाता है। *लोगोस* (एक यूनानी शब्द है जिसका अनुवाद हिन्दी में वचन के रूप में किया गया है) के बिना कुछ भी नहीं बना। इस शब्द का क्या अर्थ है ? जातिवाचक संज्ञा के रूप में, यह कोई विचार देने वाला सुस्पष्ट स्वर हो सकता है। किसी श्रवणीय स्वर को मानने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु शायद (मानवीय कार्यों की भाषा में) इन कथनों में इसका अर्थ है:

> क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया; जब उसने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया (भजन संहिता 33:9)।
>
> आकाशमंडल यहोवा के वचन से और उसके सारे गण उसके मुंह की श्वास से बने (भजन संहिता 33:6)।[12]

इसलिए, यूहन्ना के अधिकार पर, भजन संहिता 33:6 में दाऊद की चिल्लाहट सही-

सही पढ़ी जा सकती है:

> आकाशमंडल यहोवा के *लोगोस* से,
> और उसके सारे गण उसके मुंह की श्वास से बने।

परन्तु, *लोगोस* का इस प्रकार से वर्णन अर्थात यह कि वह स्वयं परमेश्वर था, स्पष्ट स्वर से बढ़कर था।

यीशु को शायद *लोगोस* इसलिए कहा गया है क्योंकि यह शब्द बहुत ही व्यापक है। जिस प्रकार एक मौखिक स्वर किसी विचार को प्रेषित करता है, उसी प्रकार *लोगोस* शब्द विचार तथा तर्क को व्यक्त करता है। दर्शन शास्त्र में, *लोगोस* की परिभाषा संसार के युक्तिसंगत सिद्धांत के रूप में की जाती है। इस शब्द को यीशु पर लागू करने पर, इसका अर्थ परमेश्वर का विचार, तर्क व बुद्धि हो जाता है। *लोगोस* के रूप में यीशु तर्क व बुद्धि का मानवीकरण है।

लोगोस ने सृष्टि में न केवल बुद्धि, तर्क तथा विचार को ही दिखाया, बल्कि पुराने नियम की पुस्तकों की प्रेरणा देने और उनके वास्तविक लेखक के रूप में सृष्टि की रचना के बाद भी उसने अपना काम जारी रखा। भविष्यवक्ताओं में मसीह का आत्मा था (1 पतरस 1:10, 11)। मसीह ने ही दाऊद को प्रेरित किया, चाहे दाऊद ने इसे इस प्रकार से व्यक्त किया था:

> यहोवा का आत्मा मुझ में होकर बोला, और उसी का वचन मेरे मुंह में आया (2 शमूएल 23:2)।[13]

सृष्टि से बैतलहम तक यीशु केवल *लोगोस* ही नहीं था जिसने सृष्टि की रचना की और भविष्यवक्ताओं को प्रेरित किया, बल्कि वह इस्राएलियों के ''आगे आगे चलने वाली आत्मिक चट्टान'' भी था। उसी ने उनकी प्यास बुझाई थी (1 कुरिन्थियों 10:4)।

अन्त में, उसका वर्णन एक ऐसे वाक्यांश अर्थात ''जो आता है'' (भजन संहिता 118:26; मत्ती 11:3; 21:9 भी देखिए) से हुआ जो बहुत ही विशेष बन गया और उससे आशा रखने वालों की अपेक्षाएं बढ़ गई थीं।

बैतलहम से पुनरुत्थान तक

जब समय पूरा हुआ तो जिसके आने की प्रतिज्ञा की गई थी वह ''स्वर्ग से उतर'' आया (यूहन्ना 6:51; गलतियों 4:4)। पहले वाला स्वर्ग का आत्मिक *लोगोस* मनुष्य के रूप में देहधारी हुआ (यूहन्ना 1:14)। परमेश्वर की योजना थी कि शारीरिक रूप से वह स्त्री की संतान, इब्राहीम की संतान और दाऊद की संतान हो (उत्पत्ति 3:15; 22:18; 2 शमूएल 7:12-14)। परमेश्वर की यह योजना भी थी कि उसका जन्म कुंवारी से हो,[14] जो कि कम महत्व की बात नहीं है।

बिना पिता के (*parthenogenesis*) बच्चे के जन्म को असम्भव बताने वाले प्रकृतिवादियों की आलोचना से कुछ लोगों का विश्वास कमज़ोर हुआ है। परन्तु, जैसे एक प्रकृतिवादी यह नहीं समझ सकता कि मां के गर्भ में बच्चे की हड्डियां कैसे बढ़ती हैं, वैसे ही वह यह भी नहीं समझ सकता कि माता-पिता से बच्चे का जन्म कैसे होता है (सभोपदेशक 11:5)। यदि यीशु का जन्म माता और पिता से हुआ था, तो उसने हम से ऊपर अर्थात ईश्वरीय नहीं होना था। जो व्यक्ति यह कहता है कि वह यीशु में विश्वास करता है परन्तु उसके कुंवारी से जन्म में नहीं, तो वह यह कह रहा होता है कि वह यीशु को पूर्ण रूप से मनुष्य मानता है। यदि वह केवल मनुष्य होता, तो यह सोचने का कोई कारण नहीं था कि उसके लहू में किसी और भले मनुष्य के लहू से अधिक बचाने की सामर्थ होती। इसके अलावा यदि वह केवल मनुष्य होता, तो न तो वह कब्र में से जी उठ सकता था और न ही किसी और को मुर्दों में से जिला सकता था। कुंवारी से जन्म के बिना मसीहियत एक ऐसा धर्म बन जाती है जो लहू से उद्धार और पुनरुत्थान के बिना है। यह केवल इस जीवन के लिए एक सामाजिक सुसमाचार तक सीमित हो जाती।

यीशु का ईश्वरीय होना उसके स्वर्गीय (मानवीय नहीं) पिता पर निर्भर है, इसलिए उसकी ''परमेश्वर का पुत्र'' (लूका 1:35) कहलाने की आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है। इसके साथ ही, यीशु ने यह आवश्यक समझा कि उसे ''मनुष्य का पुत्र'' कहा जाए। उसके मुख से निकले इस शब्द को ब्यासी बार लिखा गया है जो किसी भी दूसरे शब्द से अधिक है। मनुष्य का पुत्र होने के कारण, वह मनुष्य था और सारे संसार के पापों हेतु बहाने के लिए उसके पास लहू था (मत्ती 26:28; इब्रानियों 2:9; 9:22; 1 यूहन्ना 2:2)। मनुष्य के पुत्र के रूप में, वह मनुष्य की निर्बलताओं से सहानुभूति रख सकता था (इब्रानियों 2:17, 18; 4:15)। क्योंकि वह मनुष्य का ईश्वरीय पुत्र था, इसलिए उसे मरना ही था, परन्तु, मरकर वह मृत्यु पर विजय पा सकता था (यूहन्ना 11:25-27; 14:19; 2 तीमुथियुस 1:10)।

कुछ लोग कल्पना करते हैं कि परमेश्वर के लिए मनुष्य बनने का अर्थ अपने आपको बहुत ही छोटा कर देना होगा। उदाहरण के लिए, नास्तिकों के विचार से मनुष्य बनना गलत ही था। उनके अनुसार परमेश्वर मनुष्य नहीं बना, बल्कि वह वास्तविक मनुष्य यीशु पर उसके बपतिस्मे के समय उतरा और उसके क्रूसारोहण के बाद उसे छोड़कर चला गया। डोस्टिक नास्तिक लोग यीशु के मनुष्य बनने का यह कहकर इन्कार करते थे कि वह तो केवल एक कल्पित व्यक्ति है, जो अपने जन्म तथा मृत्यु के लिए ही प्रकट हुआ, इसलिए यह वास्तविकता नहीं है।[15] कई अविश्वासियों ने यीशु को पूरी तरह मिथ्या बताने का प्रयास किया है; परन्तु ऐसा करके, उन्हें मानना पड़ेगा कि जॉर्ज वाशिंगटन, जूलियस सीज़र और सिकन्दर महान को भी मिथ्या बताना आसान है। परिणामस्वरूप बहुत से अविश्वासी लोग पहली शताब्दी में हुए वास्तविक यीशु नासरी के तथ्य पर संदेह नहीं करते थे।

इतनी उलझन के बावजूद भक्ति का भेद बहुत बड़ा है (1 तीमुथियुस 3:16)। कोई भी व्यक्ति इस बात को नहीं समझा सकता कि परमेश्वर मनुष्य कैसे बना या वह दोबारा महिमा में कैसे गया, परन्तु यह विश्वास करना आसान है: ''क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और

परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में बिचवई भी एक ही है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है'' (1 तीमुथियुस 2:5)। वह परमेश्वर की ओर से नीचे आया, और अपने रहने के स्थान पर लौटने का मार्ग उसी को पता है: ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)।

पुनरुत्थान से न्याय के दिन तक

यीशु ने अपनी शारीरिक मृत्यु के पार स्वर्ग में अपने पिता के साथ फिर से महिमा पाने की स्थिति को देखा (यूहन्ना 17:5)। ''उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था'' उसने लज्जा को तुच्छ जानकर क्रूस का कष्ट सहा (इब्रानियों 12:2)। उसने ताकतवर व्यक्ति अर्थात मृत्यु के घर में प्रवेश किया और तीन दिन तक वहां रहा जो यह प्रमाणित करने के लिए काफी था कि वह सचमुच में मरा था। फिर उसने अधोलोक की कुंजियां लीं, ''ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे। और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले'' (इब्रानियों 2:14, 15; देखिए प्रकाशितवाक्य 1:17)। इस प्रकार उसने ''मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया'' (2 तीमुथियुस 1:10)।

कब्र में से जी उठने पर, यीशु को सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया था (रोमियों 1:4)। जी उठने वाले रविवार (9 अप्रैल, 30 ईस्वी) अन्ततः भजन संहिता 2:7 में लिखित परमेश्वर की धन्य पुकार पूरी हो गई: ''तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ है।'' यीशु मसीह न तो अनन्तकाल से सृष्टि तक और न ही सृष्टि से बैतलहम के समय परमेश्वर का पुत्र था। वह बैतलहम से परमेश्वर का पुत्र, मरियम और पिता के आत्मा का बालक बना था (लूका 1:35)। तब भी वह भजन संहिता 2:7 के अर्थ में परमेश्वर का पुत्र नहीं था। शारीरिक रूप से यीशु के कुंवारी से जन्म द्वारा परमेश्वर का पुत्र बनने के तैंतीस वर्षों के बाद परमेश्वर ने उसे जिलाया था (प्रेरितों 13:33)। केवल तभी वह भविष्यवाणी कि ''जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है, कि तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है'' पूरी हुई।

ऐसा कैसे हो गया? पुनरुत्थान की बात से जन्म की घोषणा कैसे पूरी हो गई? मूलतः भविष्यवक्ता की बात का कोई अर्थ नहीं निकलता है। परन्तु प्रतीकात्मक रूप से उसकी बात सुन्दर लगती है। किसी घर में एक बच्चे के जन्म की घोषणा से बढ़कर कोई अच्छी घोषणा नहीं हो सकती है। वैसे ही अपने आपको एक पिता के रूप में मानते हुए, यीशु की विजयी मृत्यु की घोषणा करने से बढ़कर परमेश्वर के लिए और कोई घोषणा नहीं थी। मृत्यु का उस पर कोई अधिकार न होने के कारण, यीशु हमारा अगुआ बन गया। तब वह ''अपनी महिमा'' में प्रवेश कर पाया जिसके लिए उसने प्रार्थना की थी (रोमियों 6:9; इब्रानियों 6:20; लूका 24:26)।

जैतून के पहाड़ (जहां से वह स्वर्ग पर चढ़ा) और स्वर्ग के बीच, यीशु ने कीलें ठुकी अपनी शारीरिक देह को ऊपर उठा लिया था। वह फिर से वही बन गया जो तैंतीस वर्ष पूर्व

स्वर्ग छोड़कर आने से पहले था (1 कुरिन्थियों 15:50)। यद्यपि उसने मनुष्य बनकर शताब्दी का एक तिहाई समय पृथ्वी पर बिताया, परन्तु दोबारा उसने इतना नीचे कभी नहीं आना था (2 कुरिन्थियों 5:16)। इस प्रकार पुनरुत्थान के दिन भजन संहिता 2:7 की बात पूरी हुई थी।

पवित्र शास्त्र में कहने के लिए और भी बहुत कुछ है। स्वर्गारोहण के दस दिन बाद (18 मई) पिन्तेकुस्त के दिन (28 मई), यीशु को प्रभु भी और मसीह भी बनाया गया था। उस दिन उसे कलीसिया का सिर और मलकिसिदक की रीति पर महायाजक बनाया गया था। वह दाऊद के आत्मिक सिंहासन पर बैठा था और उसे राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु का मुकुट पहनाया गया था। फिर, उस दिन, परमेश्वर ने स्वर्ग से पुकारकर कहा था ''तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है'' (प्रेरितों 13:33; इब्रानियों 1:1–5; 5:5, 6; देखिए इफिसियों 1:20–23)। उसके पुनरुत्थान के दिन की तरह, उसके स्वर्गारोहण का दिन भी था अर्थात उसका पुत्र होना शारीरिक और अक्षरश: नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक और गहरे अर्थ वाला था। संसार का भाग्य इस महान सच्चाई पर टिका है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

पिन्तेकुस्त के दिन से संसार के अन्त तक, आकाश और पृथ्वी दोनों का सारा अधिकार पुत्र को दे दिया गया है। स्वर्गदूत, अधिकारी और सामर्थी सब उसके अधीन किए गए हैं (मत्ती 28:18; 1 पतरस 3:22)। उसे वह नाम दिया गया है जो आकाश, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे सब नामों से ऊंचा है (फिलिप्पियों 2:10)। पिन्तेकुस्त से न्याय के दिन तक पिता भी अपने पुत्र के पक्ष में कम महिमा लेता है। ''जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिस ने उसे भेजा है, आदर नहीं करता'' (यूहन्ना 5:23)। ''पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे'' (कुलुस्सियों 1:19)। हर बात में मसीह को महत्व दिया जाना आवश्यक है (कुलुस्सियों 1:18)। अच्छे और शुद्ध मन वाले लोग स्वतन्त्रता से प्रेमपूर्वक अपने सब विचारों को मसीह के अधीन करते हैं (2 कुरिन्थियों 10:5)। परमेश्वर पिता ने यीशु को लोगों के लिए एक चिह्न, जातियों के लिए एक अगुआ और सेनापति बनाया है (यशायाह 11:10; 55:4)।

यीशु के श्रेष्ठतम प्रभुत्व के दौरान, पापियों को चाहिए कि वे उसे बिचवई बनाएं और परमेश्वर के पास आएं। मसीही लोग भी अपने पापों की क्षमा केवल उसे ही अपना सहायक बनाकर पा सकते हैं (1 तीमुथियुस 2:5; 1 यूहन्ना 2:2)। उसे अब अपने लोगों के लिए स्थान तैयार करते हुए दिखाया जाता है (यूहन्ना 14:1–3)। अन्त में, न्याय के दिन सब लोग न तो पिता और न ही पवित्र आत्मा के सामने बल्कि मसीह के सामने खड़े होंगे जिसे परमेश्वर ने ठहराया है (प्रेरितों 17:30; यूहन्ना 5:22; 2 कुरिन्थियों 5:10)।

न्याय के दिन से अनन्तकाल में

न्याय के बाद, प्रधान सेनापति का कार्य यीशु अपनी इच्छा से पिता को सौंप देगा। तब पुत्र स्वयं भी अपने लोगों सहित उसके अधीन हो जाएगा जिसने पिन्तेकुस्त से लेकर न्याय के

दिन तक अपनी सामर्थ उसे दी थी, ताकि परमेश्वर ही सब में सब कुछ हो (1 कुरिन्थियों 15:24)। अधिकार का यह प्रत्यर्पण इतना सहज होगा कि पता भी नहीं चलेगा, क्योंकि अनन्तकाल तक पुत्र (लूका 1:33; इब्रानियों 1:8) और पवित्र लोग (प्रकाशितवाक्य 3:21; 22:3-5) परमेश्वर पिता के साथ मिलकर राज करेंगे। ''आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर हैं! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं! ... उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे: आमीन'' (रोमियों 11:33, 36)।

पाद टिप्पणियां

[1]''अनादि पिता'' के लिए सामान्यत: *'abi 'ad* (यशायाह 9:6; इब्रानी में आयत 5) शब्द को सही-सही, और इस संदर्भ में सम्भवत: और भी सही अर्थ ''अनन्तकाल का पिता'' लगाया जा सकता है। [2]YHWH का सही अनुवाद ''यहोवा'' शब्द नहीं है, बल्कि यशायाह 44:6 ''यहोवा, जो इस्राएल का राजा है, अर्थात सेनाओं का यहोवा जो उसका छुड़ानेवाला है, वह यों कहता है, मैं सब से पहिला हूं, और मैं ही अन्त तक रहूंगा; मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं'' की तरह यह वही शब्द है जो अमेरिकन स्टैण्डर्ड वर्ज़न की तरह एक और जीवित परमेश्वर को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया गया है। इसी शब्द को नये नियम में यीशु के रूप में पहचान दी गई है। NASB में इसे ''Lord'' अर्थात प्रभु कहा गया है। जबकि हिन्दी की बाइबल में इसे यहोवा ही लिखा गया है (यशायाह 40:3 की मत्ती 3:3 से; यशायाह 44:6 की प्रकाशितवाक्य 1:17; 22:13 से; योएल 2:32 की प्रेरितों 2:21 से तुलना कीजिए)। [3]''पहलौठा'' शब्द का सम्बन्ध सम्मान से है। पुराने नियम में इस शब्द में प्रतिष्ठा की लालसा की जाती थी। यह *प्राथमिकता* के सम्मान के लिए था, क्योंकि परिवार के दूसरे बच्चों में पहलौठे पुत्र को दोहरा सम्मान दिया जाता था। इस शब्द में *स्थिति* का आदर भी दिखाई देता था, क्योंकि यह किसी के चरित्र की उत्तमता के कारण दिया गया हो सकता था। यीशु को दोनों कारणों से पहलौठा कहा गया है: वह पहलौठा है क्योंकि मुर्दों में से उसका हम से पहले पुनरुत्थान हुआ है (कुलुस्सियों 1:18), और वह पहलौठा है क्योंकि परमेश्वर ने उसे सब बातों में प्राथमिकता देकर ऊंचा किया है (इब्रानियों 1:6)। [4]पवित्र शास्त्र का न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन बाइबल का सही अर्थ नहीं देता बल्कि एक पूर्वाग्रह वाला अनुवाद है जो एक धार्मिक गुट की शिक्षाओं का समर्थन करने के लिए बनाया गया था। इसमें यूहन्ना 1:1 का अनुवाद इस प्रकार किया गया है: ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन ईश्वर था।'' यही सम्भावित शिक्षक जिन्होंने ऐसा अनुवाद किया यूहन्ना 1:6 का अनुवाद इस प्रकार करने के लिए बाध्य होंगे: ''एक मनुष्य ईश्वर की ओर से भेजा गया जिस का नाम यूहन्ना था।'' न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन में यीशु को अन्य देवताओं में से एक देवता के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो कि परमेश्वर को भी अन्य बहुत से देवताओं में मिला देता है। [5]कुलुस्सियों 1:18 में *Arche* का अर्थ है ''वह व्यक्ति अथवा वस्तु जो आरम्भ करता है, अर्थात एक शृंखला में पहला व्यक्ति या वस्तु या अगुआ'' (सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट*)। [6]प्रकाशितवाक्य 3:14 में *Arche* का अर्थ ''जिसके द्वारा कुछ आरम्भ होता है अर्थात मूल या सक्रिय कारण'' (थेयर, 77); इसका अर्थ है ''पहला कारण'' (अर्न्डट, गिंग्रिच, और डैंकर, 111)। अर्न्डट गिंग्रिच, डैंकर का दावा था कि भाषा के हिसाब से प्रकाशितवाक्य Arche ''पहले रचा गया'' सम्भव है, जहां इसे पिता के लिए इस्तेमाल किया गया है। भाषा के हिसाब से दो अर्थ सही हो सकते हैं, परन्तु शास्त्र और तर्क के हिसाब से केवल ''पहला कारण'' ही सही है। [7]प्रकाशितवाक्य 22:13 में ''आदि और अन्त'' मसीह को कहा गया है और प्रकाशितवाक्य 21:6 में पिता को। [8]पिता (भजन 90:1, 2), पुत्र (मीका 5:2; इब्रानियों 13:8) और आत्मा (इब्रानियों 9:14) सदा से सदा तक अर्थात अनन्त हैं। [9]अंग्रेज़ी के KJV और अमेरिकन स्टैण्डर्ड वर्ज़न में यूहन्ना 1:18; 3:16, 18; 1 यूहन्ना 4:9 में ''begotten'' शब्द एक

गलत अनुवाद है, क्योंकि इन पदों में ''begotten'' के लिए यूनानी शब्द नहीं मिलता। इसके स्थान पर, ''kind'' और ''only'' के लिए यूनानी शब्द का एक रूप मिलता है। इन्हीं अनुवादों में यूनानी के इन दो शब्दों के सही अनुवाद के लिए देखिए लूका 7:12; 8:42; 9:38 (''only'') और मरकुस 9:29 (''kind'')। [10]आर्थर कशमैन मैकगिफर्ट, *ए हिस्टरी ऑफ़ क्रिश्चियन थॉट।*

[11]विशेष रूप से वे यशायााह 9:6; यूहन्ना 3:13; 10:30; 14:9; 2 कुरिन्थियों 5:19; कुलुस्सियों 2:9 का दुरुपयोग करते हैं। ''एक परमेश्वर में एक व्यक्ति'' के विचार पर जी. के. कॉलेज और रेय वॉन में बहस हुई थी। [12]भजन संहिता 33:6 में सप्तति अनुवाद (LXX) में *to logo tou kuriou* अर्थात ''प्रभु के वचन से'' है। [13]सप्तति अनुवाद में *लोगोस* है। [14]यशायाह 7:14 में ''युवती'' या ''कुमारी'' के लिए पवित्र आत्मा का शब्द (इब.: *'almah*) शारीरिक रूप से वयस्क लड़की के लिए सामान्य शब्द है। 735 ई. पू. में, पवित्र आत्मा ने कहा था, कि एक प्रसिद्ध वयस्क लड़की (पुरुष को जाने [गी]) पुत्र को जन्म देगी जिसका नाम इम्मानुएल (पर वास्तव में वह होगा नहीं) रखेगी। 5 ई. पू. में एक अज्ञात वयस्क लड़की (बिना पुरुष को जाने) एक पुत्र को जन्म देगी और उसका नाम इम्मानुएल (और वह वास्तव में होगा) रखेगी। यशायाह 7:14 की आत्मा की अगुवाई में लिखी गई भाषा इतनी व्यापक है कि इस आठवीं शताब्दी ई. पू. में एक गैर चमत्कारी जन्म और पहली शताब्दी में एक चमत्कारी जन्म को समझाया जा सकता है (आठवीं शताब्दी ई. पू. की जिस वयस्क लड़की की बात की गई थी उसके लिए ''पुरुष को जानना'' आवश्यक था, क्योंकि उस शताब्दी में कुंवारी से कोई जन्म नहीं हुआ था)।

उसका एक चित्र जो आने वाला था

(रोमियों 5:12-21; 1 कुरिन्थियों 5:20-26, 45-49)

आदम और मसीह में समानताएं:

आदम ...	**मसीह ...**
आदम को आश्चर्यकर्म से बनाया गया था (उत्पत्ति 2:7)	आश्चर्यकर्म से एक कुंवारी से उत्पन्न हुआ था (यशायाह 7:14; मत्ती 1:23)
मनुष्य अर्थात प्राणी था (1 कुरिन्थियों 15:45)	मनुष्य अर्थात प्राणी था (रोमियों 8:3; गलतियों 4:4; फिलिप्पियों 2:7)
परमेश्वर का पुत्र कहलाया था (उत्पत्ति 1:27; 6:2)	परमेश्वर का पुत्र है (लूका 3:38; यूहन्ना 3:16)
सृष्टि के समय सिद्ध था (देखिए उत्पत्ति 1:31; यहेज. 28:15; मत्ती 19:14)	सिद्ध है (इब्रानियों 4:15; 5:9)

आदम और मसीह में विषमताएं:

आदम ...	**मसीह ...**
''प्रथम मनुष्य'' था (1 कुरिन्थियों 15:45, 47)	''दूसरा मनुष्य'' था (1 कुरिन्थियों 15:47)
सम्पूर्ण जगत में आया (उत्पत्ति 1:31)	ऐसे संसार में आया जो शापित हो चुका था (उत्पत्ति 3:17)
एक पापी था (रोमियों 5:14)	पापरहित था (इब्रानियों 4:15; 7:26)
से पाप लाया (रोमियों 5:12)	से पापों की क्षमा आई (प्रेरितों 10:43)
ने परमेश्वर का दण्ड पाया (रोमियों 5:16)	परमेश्वर का प्रिय था (मत्ती 3:17; देखिए यूहन्ना 8:29)
वहां था जहां पाप का राज्य है (रोमियों 5:21)	वहां है जहां अनुग्रह का राज्य है (रोमियों 5:21)
हमें जीवन के वृक्ष से अलग किया (उत्पत्ति 3:24)	हमें जीवन के वृक्ष के पास ले जाएगा (प्रकाशितवाक्य 22:1, 2)
सबके लिए मृत्यु लेकर आया (रोमियों 5:15, 17; 1 कुरिन्थियों 15:21, 22, 45)	सबके लिए पुनरुत्थान लाएगा (यूहन्ना 10:10; 11:25; 1 कुरिन्थियों 15:23-26)
पृथ्वी का था (1 कुरिन्थियों 15:45, 47, 48)	स्वर्ग का है (1 कुरिन्थियों 15:47)

जब पाप और स्वर्ग की बात होती है तो मसीह की आशिषें सशर्त हैं। लोग चाहें तो उसकी आशिषें ''प्राप्त कर'' सकते हैं: ''क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा शासन किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के अर्थात यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे'' (रोमियों 5:17)। वे चाहें तो उसकी आशिषें ''ठुकरा'' भी सकते हैं: ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसे दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा'' (यूहन्ना 12:48)।